Mahila college Dalmianagar.
Department of History
B.A II (Hons)

DR. ANU KUMARI
Date:- 01/07/2021

Q1- अकबर की धार्मिक नीति पर प्रकाश डाले?

=> मुगलो की धार्मिक नीति की निश्चित रूपरेखा अकबर के समय में खींची गई। उसकी नीति को समझने के लिए उसके शासनकाल को तीन भागों में बाँटा जा सकता है।
① 1556-1565 ई॰, ② 1565-1575 ई॰, ③ 1575-1605 ई॰

प्रथम चरण में उसने ऐसे कदम उठाए जिसका बहुसंख्यक हिन्दू जनता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। उदाहरण युद्ध बन्दियों को जबरन दास बनाने की प्रथा की समाप्ति, राजपूतों के साथ वैवाहिक सम्बंध, हिन्दुओं पर लगने वाले तीर्थयात्रा कर की समाप्ति, जजिया कर की समाप्ति, जबरन धर्म परिवर्तन करने की समाप्ति इन कार्यों से जहाँ एक और गैर-इस्लाम धर्मावलम्बियों के प्रति धार्मिक सहिष्णुता विकास हुआ। लेकिन इसी काल में महादवियों और शियाओं पर जुल्म भी ढाए गए जिसे आमतौर पर नजरअन्दाज कर दिया जाता है लेकिन ऐसे उदाहरण अपवाद स्वरूप ही है।

- अकबर की इस उदारनीति के पीछे कई कारण है।

1) अकबर की माँ हमीदा बानो बेगम, गुरु अब्दुल

Scanned with CamScanner

नैतिक एवं संरक्षक जैसा रूपी मित्र थे।
अकबर का जन्म जहाँ हुआ था वह एक राजपूत रियासत
2) थी।
भक्ति एवं सूफी आन्दोलन का प्रभाव उसके व्यक्तित्व
3) पर पड़ा था।

अकबर के शासनकाल के द्वितीय चरण में कुछ ऐसे कदम उठाए जाते हैं जिससे उसके सम्बंध में परम्परागत विचार खण्डित होते हैं। अकबर के वकील मुनीम खाँ के हस्ताक्षर एवं सील मोहर से एक आदेश जारी किया गया जिसके अनुसार आगरा एवं उसके आसपास के क्षेत्र में जजिया कर लगाया जाना था। अकबर के शासनकाल का यह दौर साम्राज्य विस्तार का दौर था। इस दौर में उसने न केवल प्रमुख भारतीय रियासतों को घुटने टेकने पर विवश कर दिया बल्कि विद्रोही नेताओं को भी पूर्ण पराजित कर दिया। बंगाल से गुजरात एवं कश्मीर से मालवा तक उसके शासन की स्थापना हो चुकी थी। इस दौरान असहिष्णुता कहा जा सकता है। असहिष्णुता के इस दौर में भी महत्वपूर्ण बात यह है कि राजपूत रियासतें मुगलों की सेवा में निरन्तर आती रहीं एवं बहुसंख्यक हिन्दु जनता का उसे समर्थन प्राप्त हुआ इस तरह अकबर की यह असहिष्णुता उसकी सामान्य प्रवृत्ति का द्योतक नहीं थी बल्कि विस्तार का एक उपक्रम मात्र थी।

अकबर के शासनकाल के तीसरे चरण मे इबादतखाना का निर्माण किया जाता है। इसका द्वार गैर इस्लाम धर्मावलम्बियों के लिए भी खोल दिया जाता है इसके द्वारा उसने धार्मिक वर्ग अर्थात् मुल्ला वर्ग पर प्रभावी नियंत्रण कायम करने का प्रयास किया। फिर वह तौहीद - ए - इलाही की घोषणा करता है। इस घोषणा के द्वारा वह सभी धर्मों का सार प्रस्तुत करता है एवं धार्मिक सहिष्णुता लाने का प्रयास करता है। अपवाद के रूप मे इस काल की घोषणा को भी सिरे क्रियान्वित नहीं किया जा सका। यह जानकारी हमें बदायुँ की पुस्तक - मुन्तखब - उत् - तवारीख से मिलती है।

अकबर के शासनकाल के इस दौर मे साम्राज्य का व्यापक विस्तार हो चुका था इसलिए एक ऐसी नीति की जरूरत थी, जो शासन को स्थायित्व प्रदान कर सके तथा शासन एवं शासित के बीच के अन्तर को न्यूनतम कर सके। यही वजह है कि अकबर सुलह - ए - कुल की नीति को अपनाता है जिसकी चर्चा अबुल - फजल अपनी पुस्तक आइन - ए - अकबरी मे करता है। इसी नीति के तहत तौहीद - ए - इलाही की घोषणा की जाती है जिसका उद्देश्य नए धर्म का प्रतिपादन करना नहीं बल्कि धार्मिक समन्वय स्थापित करना था। यही वजह है कि उसने इसे स्वीकार करने के लिए किसी प्रकार का दबाव नहीं डाला।

यहाँ तक कि उसके सिर्फ 22 अनुयायी थे जिसमें सिर्फ एक हिन्दू था वह था राजा बीरबल। अकबर ने अपनी मनसबदारी में न सिर्फ राजपूतों को शामिल किया बल्कि उसे उच्चतम मनसबदारी भी प्रदान की उदाहरणतः राजा मानसिंह। इस प्रकार हम देखते हैं कि अकबर के शासनकाल में आमतौर पर धार्मिक सहिष्णुता की नीति का पालन किया गया।

Scanned with CamScanner